B.Ed – Ist Year
Gender, School and Society
Course – 6

Nakul Sah
Assistant Professor

# Role of Textbook
(पाठ्य - पुस्तकों की भूमिका)

## लैंगिक समानता को सुदृढ़ बनाने में पाठ्य - पुस्तकों की भूमिका

पाठ्य - पुस्तकों में निहित विषय-सामग्री के द्वारा भी लैंगिक समानता को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। जैसे- हिन्दी की पुस्तक में महादेवी वर्मा, सरोजनी नायडू आदि की जीवनी को स्थान देने से बालिकाओं में उनके आदर्शों पर चलने की भावना जागृत होती है तथा लैंगिक समानता का मार्ग भी प्रशस्त होता है। अतः लैंगिक समानता को सुदृढ़ बनाने में पाठ्य- पुस्तकों की भूमिका का वर्णन निम्नलिखित रूपों में किया जा सकता है —

1. **आदर्शवादी पाठ्य - पुस्तकों का समावेश** – विद्यालय में आदर्शवादी पाठ्य-पुस्तकों को शामिल करना चाहिए क्योंकि आदर्शों के अभाव में लैंगिक असमानता को समाप्त नहीं किया जा सकता है। अतः प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर पर आदर्शवादी पाठ्य - पुस्तकों को स्थान दिया जाना चाहिए। इसी के द्वारा प्रत्येक बालक व बालिका में आदर्शों का विकास किया जा सकता है तथा आदर्शवादी बालक- बालिकाओं में लैंगिक असमानता की स्थिति नहीं देखी जाती है।

2. **सकारात्मक सोच आधारित पाठ्य - पुस्तकें** – प्रत्येक स्तर पर चयनित पाठ्यचर्या में उन पाठ्य - पुस्तकों का समावेश अनिवार्य रूप से होना चाहिए जिसके द्वारा बालक व बालिकाओं में सकारात्मक सोच विकसित हो सके एवं महिला व पुरुष के मध्य किसी प्रकार का भेदभाव प्रदर्शित न हो पाए। इससे लैंगिक भेदभाव समाप्त होगा तथा सामाजिक स्तर पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

Scanned with CamScanner

3. समानता की भावना का समावेश - पाठ्य- पुस्तकों में समानता का भाव प्रदर्शित करने वाली विषय सामग्री का समावेश होना चाहिए ताकि बालक- बालिकाओं में समानता का भाव विकसित हो सके। प्राथमिक स्तर बालक- बालिका के सहयोग से सम्बन्धित कहानियाँ पढ़ाई जानी चाहिए।

4. महिला के सशक्तिकरण का समावेश - महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित सामग्रियों का समावेश पाठ्य - पुस्तकों में होना चाहिए। महिला सशक्तिकरण के उपायों से बालिकाओं में जागरूकता का विकास होता है एवं बालिकाएँ अपने अधिकारों से परिचित होती है। साथ ही बालक भी परिचित होते है इससे वे बालिकाओं के प्रति सकारात्मक भाव रखते हैं। इससे भी लैंगिक समानता सुदृढ़ होती है।

5. नैतिकता आधारित पाठ्य- पुस्तकें - प्राथमिक स्तर पर ही नैतिकता आधारित पाठ्य- पुस्तकों का प्रचलन होता है, जबकि इसका प्रचलन उच्च माध्यमिक स्तर तक होना चाहिए। नैतिकता आधारित पाठ्य - पुस्तकों से बालक व बालिकाओं के नैतिक दायित्व निर्धारित किए जाते है। इसमें बालक व बालिकाओं की समानता को प्रकाशित किया जाता है। जब प्राथमिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर तक बालक व बालिकाएँ नैतिकता आधारित पाठ्य- पुस्तकों का अध्ययन करेंगे तो निश्चित ही लैंगिक समानता का विकास होगा।

6. महिला जागरूकता आधारित पाठ्य -पुस्तकें - पाठ्य पुस्तकों में महिला जागरूकता से सम्बन्धित विषय सामग्रियों का समावेश करना चाहिए ताकि बालक एवं बालिकाएँ दोनों इन प्रकरणों को पढ़ सकें। इससे छात्राएँ स्वयं जागरूक होंगी ही साथ ही छात्र भी उन्हें जागरूक करने में सहयोग करेंगे। इससे भी लैंगिक समानता का विकास होगा।

7. स्वतंत्रता की भावना का विकास - पाठ्य - पुस्तकों की विषय सामग्री में महिला - पुरूष के अधिकारों की विवेचना

Scanned with CamScanner

होनी चाहिए एवं प्रत्येक बालक व बालिका को अपने स्वतंत्रता से सम्बन्धित अधिकारों की ज्ञान होना चाहिए। इस प्रकार के तथ्यों के अध्ययन के द्वारा दोनों (बालक व बालिका) एक-दूसरे की स्वतंत्रता पर पर्याप्त विचार करने में सक्षम होंगे। इससे भी लैंगिक असमानता का उन्मूलन होगा तथा लैंगिक समानता स्थापित होगी।

Scanned with CamScanner